आजीविकाएं (जारी)

स्थानीय कौशलों का संरक्षण भी इन प्रयासों का एक अहम पहलू रहा है। ये कौशल खास संस्कृतियों और स्थानों से जुड़े हैं और इनमें स्थानीय मिट्टी से उपजे कुदरती रंगों, छपाई के परंपरागत तरीकों और कपड़ों का ही इस्तेमाल किया जाता है।

खमीर इन्हीं विचारों के संगम का एक मंच है। खमीर कच्छ में वर्षा आधारित और जैविक ढंग से उगाई गई कपास की मार्केटिंग करता है जिसे यहां 'काला' कहा जाता है (देखें चित्र ५)।

कुदरती रंगों से नील का उत्पादन।

भुज में खमीर की दुकान।

नरसिम्हा और मनेम्मा दंपत्ति तेलंगाना में बनने वाले तेलिया रूमाल के लिए धागे तैयार कर रहे हैं।

बाएं : *करघे पर चढ़ाए जाने के लिए तैयार रंगा हुआ सूत।*
मध्य और दाएं : *कुदरती रंगों में रंगे सूत से बनी चिटकी साड़ियां।*

इसी तरह का एक प्रयास तेलंगाना में दस्तकार आंध्रा द्वारा किया जा रहा है। इसके तहत दस्तकारों को अपने घरों में और अपनी सुविधा के हिसाब से अपने हाथों और दिमाग का रचनात्मक ढंग से इस्तेमाल करने में मदद दी जाती है।